BT's International Journal of humanities & social science

Volume 5 Issue 1 June, 2016

ISSN : 2278 – 1595

Scanned by CamScanner

INDEX

1. Literature and Life - Dr. Anil Pathak 1

2. Harmony and Homogeneity- Myth, Mirage or Reality - Dr. Kriti Contractor 7

3. Harassment at Work Place and Social Work Intervention - Dr. Anuja Jain 12

4. Changing Life Style Patterns of Adolescents - D. K. Narang, J. Meena 17

5. Jane Austen's Emma - Dr. Sonia Jain 27

6. Want to be an Effective Leader? - "Lead by Example, Not by Extortion" - Nilesh Sancheti 38

7. Today's School Education : A Hoax , A Mirage or an Oasis - Nitesh Kumar 42

8. A Reading of Arun Joshi's A Strange Case of Billy Biswas - Kavita Bhati 45

9. Policy Structure For MSME (Small Scale Industries) - Lalit Sharma 47

10. Social Sector – Need and Approaches - Dr. Komal Sharma 59

11. Human Resource Planning - An Analytical Study of Indian Commercial Banks - Roopesh Bissa 67

12. The Depredations and Exaltations of Love in Browning's Poetry - Rakhecha Pooja Ashok 77

13. Cry the Peacock – A Critical Study - Anita Solanki 82

14. Women: Marginalized entity in Dalit Literature and society with especial Reference to Bama's SANGATI Events -Vivek 85

Scanned by CamScanner

15. The White Tiger" and " The Reluctant Fundamentalist - Rajendra Prasad Meena 89

16. डिंगल गीतों में महाराजा मानसिंह जोधपुर - डॉ. महीपाल सिंह राठौड़ 111

17. राजकीय एवं निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों का संगठनात्मक वातावरण एवं प्राध्यापकों की कार्यसन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन - डॉ. निरुपमा जैन 121

18. नौकरीपेशा महिलाओं के समक्ष उभरती नवीन चुनौतियाँ - डॉ. संदीप पुरोहित 130

19. कोटपूतली तहसील में सतत् कृषि के लिए भूमि संसाधन प्रबन्धन - डॉ. राजेन्द्र सिंह यादव 137

20. वर्तमान संदर्भ में निर्गुण संत कबीर के विचारों की विविध आयामों में उपादेयता - डॉ. राजेन्द्रकृष्ण पारीक 143

21. भारत की सोंधी धरती की गंध : डॉ. विद्यानिवास मिश्र - रीना चारण 152

22. भारत चीन सम्बन्ध व सीमा विवाद - कोमल सिंह चम्पावत 155

23. ग्रामीण औद्योगिकरण की समस्याएँ एवम् समाधान - डॉ. महेन्द्र कुमार 162

24. भारत में निजी बैंकों का वर्तमान परिदृश्य तथा जोधपुर जिले में इन बैंकों का संक्षिप्त अवलोकन - डॉ. महेन्द्र कुमार 171

25. सीकर जिले के दुर्गों का अध्ययन : खाचरियावास दुर्ग के विशेष संदर्भ में -पूनम लूनीवाल 177

26. गाँधी दर्शन में पर्यावरण चेतना : श्रम एवम् अस्वाद के परिप्रेक्ष्य में - मधु खन्ना 181

27. भारतीय अर्थव्यवस्था पर वैश्वीकरण के प्रभावों का एक संक्षिप्त अध्ययन - डॉ. राजेन्द्र प्रसाद मीणा 187

28. भारत के प्रसिद्ध लोक नृत्य -डॉ. वंदना कल्ला 193

29. मनरेगा का ग्रामीण विकास में योगदान एवं चुनौतियाँ - डॉ. दिनेश कुमार चौधरी 196

30. जाति व्यवस्था तथा अम्बेडकर का सामाजिक दर्शन - डॉ. दिनेश कुमार चौधरी 203

Scanned by CamScanner

वर्तमान संदर्भ में निर्गुण संत कबीर के विचारों की विविध आयामों में उपादेयता

डॉ. राजेन्द्रकृष्ण पारीक, सहायक आचार्य, हिन्दी–विभाग
महिला पी.जी. महाविद्यालय, जोधपुर

हिन्दी–साहित्य के इतिहास का भक्तिकाल अपनी अनुपम एवं अद्भुत छवि तथा विशिष्टताओं के कारण स्वर्णयुग कहलाता है। इस काल में ये दो भक्तिकाव्यधाराएँ बहीं – सगुण भक्तिकाव्यधारा तथा निर्गुण भक्तिकाव्यधारा।

सगुण भक्तिकाव्यधारा में ये दो उपधाराएँ प्रमुखतः बहीं :–

रामभक्तिकाव्यधारा – कृष्णभक्तिकाव्यधारा

निर्गुण भक्तिकाव्यधारा में भी ये उपधाराएँ बहीं :–

ज्ञानाश्रयी काव्यधारा – प्रेमाश्रयी काव्यधारा

निर्गुण भक्तिकाव्यधारा में अनेक पन्थ एवं सम्प्रदाय विकीर्ण हुए :–

पन्थ :– कबीर पन्थ, दादू पन्थ, विश्नोई पन्थ, बाबरी पन्थ, मलूक पन्थ, नांगी पन्थ, साहिब पन्थ और पानप पन्थ।

सम्प्रदाय :– सतनामी सम्प्रदाय, दरियादासी सम्प्रदाय, शिवनारायणी सम्प्रदाय, रामस्नेही सम्प्रदाय तथा राधास्वामी सम्प्रदाय।

निर्गुण सन्त–साहित्य में आधुनिक परिवार, समाज, राजनीति, मानवता, सद्भावना, सहिष्णुता, अहिंसा, बाह्याडम्बरों, सदाचरण, सामाजिक कुरीतियों, वर्णाश्रम–व्यवस्था, प्रेम आदि के क्षेत्र में सर्वाधिक योगदान कबीर पन्थ का ही है। इस पन्थ में संत कवि कबीर के अलावा शेखतकी, सेननाई, पीपा, रैदास, मीरांबाई, नानक, शेख मुरीद इत्यादि संत आते हैं किन्तु पूर्वोक्त विषयों पर विस्तृत एवं विशद् चर्चा करने वाले संतों में सर्वाधिक योगदान सन्त कबीर का ही रहा है।

कबीर का जन्म ऐसे समय में हुआ जब समाज अनेक बुराइयों से ग्रस्त था। छुआछूत, अन्धविश्वास तथा रूढ़िवाद का बोलबाला था तथा हिन्दू–मुसलमान आपस में दंगा–फसाद करते रहते थे। धार्मिक पाखण्ड अपनी चरमसीमा पर था और धर्म के ठेकेदार अपने स्वार्थ की रोटियाँ धार्मिक कट्टरता एवं उन्माद के चूल्हे पर सेंक रहे थे। कबीर ने इसका डट कर विरोध किया और सभी क्षेत्रों में फैली हुई सामाजिक बुराइयों को दूर करने का भरसक प्रयास किया। उन्होंने अपनी बात निर्भीकता से कही तथा हिन्दुओं

Scanned by CamScanner

और मुसलमानों को डट कर फटकारा। वस्तुतः कबीर भक्त और कवि बाद में थे, वे सही अर्थ में समाज–सुधारक पहले थे। तत्कालीन समय में कबीर के द्वारा व्यक्त समस्त विचार आधुनिक युग में भी सटीक एवं प्रासंगिक हैं। कबीर ने समाज तथा धर्म में व्याप्त बुराइयों के अलावा सदाचरण, सद्भावना, सहिष्णुता, मानवता, प्रेम, अहिंसा, कपट, कुसंगति एवं द्वेष आदि प्रसंगों पर भी स्वच्छ प्रकाश डाला है।

परिवार, समाज एवं धर्म पर व्यक्त कबीर के विशद् विचार :–

1. मानवतावाद :–

मानवतावाद का आधारभूत मूल सिद्धान्त है समस्त प्राणियों को अपने से भिन्न न समझना, समस्त जीवों में दया–भाव का समान रूप से प्रसार करना, सबके दुःख की अनुभूति को आत्मानुभूति बनाना। इसका प्रमुख कारण यह है कि सबका रचयिता एक ही है। एक ही अंश के सब अंशी है फिर मानव–मानव के बीच यह विरोध कैसा ?न कोई बड़ा है, न कोई छोटा, न कोई उच्च है, न कोई नीच। एक ही ईश्वर ने सबको जन्म दिया है। सब समान है। कबीर ने दोनों ही धर्मों के लोगों को जोरदार शब्दों में फटकारते हुए कहा–

हिन्दुन की हिन्दुआई देखी, तुरुकन की तुरुकाई।
जो तू तुरुक तुरुकनि जाया, तो भीतर खतना क्यों नहीं कराया।
जो तू ब्रह्मन ब्राह्मनी जाया, तो आन बाट से क्यों नहीं आया।

कबीर ने कहा कि मानव–जाति ही संसार में मनुष्यों के लिए एकमात्र जाति है। केवल ईश्वर ही हमें इस जाति से बहिष्कृत कर सकता है। कबीर ने कहा कि मानव अपने कर्म के द्वारा ही उच्च या नीच बनता है, जाति से नहीं –

जाति न पूछो साधु की, पूछ लीजिए ज्ञान।
मोल करो तलवार का पड़ी रहन दो म्यान।।

मानवतावाद विषयक अपने विचारों के प्रसार के लिए कबीर ने सप्त महाव्रतों का उपदेश दिया जिनसे मानव का व्यक्तिगत तथा समाजगत जीवन समुन्नत बनता है। सप्त महाव्रत ये हैं – सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, अस्वाद, अस्तेय, अपरिग्रह तथा अभय। कबीर ने कहा – सत्य ही ज्ञान है, ब्रह्म है और संसार की वास्तविक गति है। कबीर ने सत्य के प्रति महती श्रद्धा प्रकट की है –

साँच बरोबर तप नहीं, झूठ बरोबर पाप।
जाके हिरदै साँच है, ताके हिरदै आप।।

कबीर ने कहा कि सत्यवादी व्यक्ति के हृदय में ही परमात्मा निवास करता है। कबीर ने मन–कर्म–वचन से ब्रह्मचर्य के पालन का उपदेश दिया है। संयम जीवन के लिए सबसे बड़ा वरदान और प्रेरक शक्ति है। अस्वाद, अस्तेय, अपरिग्रह तथा अभय ये गुण या व्रत औदार्य, विनयशीलता और व्यापक भावनाओं का सर्जन करते हैं। इन्होंने अपने समय की जनता को बताया कि मनुष्य को एक दूसरे का शोषण नहीं करना चाहिए। सबको

Scanned by CamScanner

नम्रता की भावना ग्रहण कर सच्चाई और ईमानदारी के साथ जीवन यापन करना चाहिए –

सबतें लघुताई भली, लघुता से सब होय।
जस दुतिया को चन्द्रमा, सीर नवै सब कोय।।

2. धार्मिक पाखण्ड का खण्डन :–

कबीर स्वछन्द विचारक थे। वे मानवतावादी आस्था के साथ समाज में सुधार लाना चाहते थे। कबीर ने धार्मिक तथा सामाजिक क्षेत्र में जहाँ भी कहीं प्रगति को रोकने वाली रूढ़ियाँ देखी, वहीं उनका डट कर खण्डन किया तथा बाहरी आडम्बरों को बढ़ावा देने वाले सभी धर्मों की खुल कर आलोचना की। धर्म के ठेकेदार बनने का दम्भ करने वाले पण्डे–पुजारियों, ढोंगियों को कबीर ने खूब फटकारा। कबीर ने हिन्दू–मुसलमानों दोनों के पाखण्डों का खण्डन किया। उन्हें सच्चे मानव–धर्म को अपनाने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने हिन्दू–मुसलमानों को फटकारते हुए कहा –

अरे इन दोउन राह न पाई।
हिन्दू अपनी करे बड़ाई, गागर छुअन न देई।
वेश्या के पांयन–तर सोवै, यह देखो हिन्दुवाई।
मुसलमान के पीर मौलिया, मुरगी–मुरगा खाई।
खाला केरी बेटी ब्यावै, यह कैसी तुरकाई।

कबीर ने दोनों ही धर्म के लोगों के पाखण्ड का विरोध करते हुए कहा है –

कांकर पाथर जोरिकै मस्जिद लीनी बनाय।
ता चढ़ि मुल्ला बाँगिहै, बहरा हुआ खुदाय।।
ना हम पूजें देवी–देवता, ना हम फूल चढ़ाई।
ना हम मूरत धरे सिंहासन, ना हम घण्ट बजाई।।

कबीर ने दोनों ही धर्मावलम्बियों को फटकारते हुए कहा कि ईश्वर जोरदार अजान देने पर नहीं मिलेगा तथा मन्दिरों में घण्टे आदि बजा कर आरती से भी नहीं मिलेगा –

मोको कहँ ढूंढे रे बन्दे, मैं तो तेरे पास में।
ना मन्दिर में, ना मस्जिद में, ना काबे कैलास में।।

3. मूर्ति–पूजा का विरोध :–

कबीर ने मूर्ति–पूजा तथा उसके आडम्बरों को स्पष्टतः नकारा –

पाहन पूजै हरि मिलै, तो मैं पूजूं पहार।
तातें या चाकी भली, पीस खाय संसार।।

Scanned by CamScanner

दुनिया के बावलेपन का उपहास कबीर ने इन शब्दों में किया है –

दुनिया ऐसी बावरी, पाथर पूजन जाय।
घर की चकिया कोई न पूजै, जेहि का पीसा खाय।।

4. बाह्याडम्बरों का खण्डन :–

कबीर ने समाज के प्रति जागरूक रहते हुए साधना के क्षेत्र में व्याप्त बाहरी आडम्बरों का डट कर विरोध किया। कबीर ने जनता को सचेत करते हुए कहा कि जटाओं, मौनव्रत, सिरमुंडन, तिलक–छापों, हजयात्रा आदि से कोई साधक नहीं हो जाता। मानव को मन का योग करना चाहिए। धर्म के क्षेत्र में बाहरी आडम्बरों का विरोध करते हुए कबीर ने ये विचार प्रकट किए –

माला फेरत जुग गया, गया न मन का फेर।
कर का मनका छाड़ि कै, मन का मनका फेर।।

बिना मन के माला फेरना व्यर्थ है। आगे कबीर ने कहा कि हिन्दू अपने देवताओं को पूज–पूज कर मर गए, मुसलमान हज–यात्राएँ कर–कर मर गए तथा योगी जटाएँ बाँध–बाँध कर मर गए परन्तु इनमें से राम किसी को भी नहीं मिला –

देव पूजि हिन्दू मुए, तुरक मुए हज जाई।
जटा बांधि जोगी मुए, राम किनहूं नहिं पाई।।

कबीर ने धार्मिक ढोंगी हिन्दुओं को कहा –

छापा तिलक लगाइ कै, चले दुनी कै साथ।
दाढ़ी–मूंछ मुंडाइ कै, भक्ति न आई हाथ।।
दाढ़ी–मूंछ मुंडाइ कै, हुआ जु घोटम घोट।
मन को क्यों नहिं मुंडिए, जामै भरिया खोट।।

संन्यासियों के वस्त्रों के पाखण्ड पर प्रहार करते हुए कबीर ने कहा –

मन न रंगाए जोगी कापरा,
कपड़ा रंगाए जोगी जटवा बढ़ौले।

केशमुंडन पर प्रहार करते हुए कबीर ने कहा –

केसन कहा बिगारिया, जो मूंडौ सौ बार।
मन को क्यों नहिं मूंडिये, जामै विषय–विकार।।

दूसरों की पीड़ा को न जानने वाले को कबीर ने काफिर कहा है –

कबीरा सोई पीर है, जो जानै परपीर।
जो परपीर न जानई, सो काफिर बेपीर।।

Scanned by CamScanner

कबीर ने मुसलमानों को फटकारते हुए कहा कि पुरुष को तो सुन्नत कर उसे मुसलमान बना लेते हो परन्तु औरतों के लिए तुम क्या करोगे –

हौं तो तुरक किया करि सुनति, औरति सौं का कहिये।

5. छुआछूत का विरोध :–

कबीर जाति–प्रथा के कट्टर निन्दक थे। कबीर के युग में ब्राह्मण जाति अभिमान से ग्रस्त थी। ब्राह्मणों ने स्वयं को ऊँचा एवं शूद्रों को नीचा मान कर उन्होंने समाज में छुआछूत की प्रथा चला रखी थी। कबीर ने इसका प्रचण्ड विरोध करते हुए कहा है –

जो तू बांमन बांमनी जाया, आन बाट ह्वै क्यों नहीं आया ?

इसी प्रकार मुसलमानों से भी कबीर ने प्रश्न किया –

जो तू तुरक तुरकिनी जाया, भीतर खतना क्यों न कराया ?

शूद्रों को नीचा समझने वाले ब्राह्मणों को यह कहा है –

हमारे कैसे लोहू तुम्हारे कैसे दूद,
तुम कैसे बांमन पाण्डे हम कैसे सूद।

कबीर ने कहा कि कोई भी व्यक्ति कर्म से ही उच्च और नीच होता है –

ऊँचे कुल का जनमिया करनी ऊँच न होय।
सुवरन कलस सुरा भरा, साधू निन्दत होय।।

कबीर ने जातिगत कुरीति पर फिर कठोर प्रहार करते हुए कहा है –

एकै गरभतें दोऊँ जाये, को बांमन को शूद्रा ?
एकै लोहू कै हम दोऊं बनये, को बांमन को शूद्रा ?

6. हिंसा का विरोध :–

कबीर ने हिंसा का विरोध हर स्तर पर किया चाहे हिंसा जीभ के स्वाद के लिए की गई हो या धर्म के नाम पर यज्ञों आदि में बलि के रूप की जा रही हो। मुसलमान दिन में रोजा रखते हैं और रात में गाय की कुर्बानी देते हैं। ये दोनों विरोधी कार्य हैं, इससे भला खुदा प्रसन्न कैसे हो सकता है –

दिन में रोजा रहत है, राति हनत है गाय।
यह तौ खून वह दंगी, कैसी खुसी खुदाय।।

हमें दूध पिला–पिला कर शरीर को बलिष्ठ बनाने वाली गाय माता का वध निन्दनीय है –

जाको दूध घाइ करि पीजै, ता माता कौ वध क्यूं कीजै ?

दूध देने वाली घास पर निर्भर बकरी का वध भी क्यों किया जा रहा है –

Scanned by CamScanner

बकरी पाती खात है, ताकी काढ़ी खाल।
जे नर बकरी खात है, तिनकौ कोन हवाल।।

कबीर ने मानसिक तथा शारीरिक दोनों ही प्रकार की हिंसा का विरोध किया है। मानसिक हिंसा पर कबीर ने कहा है –

घट घट में वह सांई रहता, कटुक वचन मत बोल।

शारीरिक हिंसा पर यह कहा है –

माँस माँस सब एक है, मुरगी हिरनी गाय।
आँख देख जो खात है, ते नर नरकहि जाय।

7. कुसंगति, कपट और द्वेष की निंदा :–

समाज–सुधार की दृष्टि से कबीर ने कुसंगति, कपट और द्वेष की निन्दा की है। ये दुर्गुण अध्यात्म तथा व्यवहार दोनों के लिए हानिप्रद है। इन्हें त्यागने की बात कबीर ने कही है।

कुसंगति के लिए उन्होंने कहा है –

मूरख संग न कीजिए, लोहा जल न तिराइ।
कदली सीप भुवंग मुख, एक बूँद तिहूँ भाइ।।

कपट के विषय में उन्होंने यह कहा है –

कबीर तहाँ न जाइए, जहाँ कपट का हेत।
जानो कली अनार की, तन रातौ मन सेत।।

8. सदाचरण पर बल :–

कबीर का मत है कि अच्छी बातों को ग्रहण करना चाहिए तथा बुरी बातों का त्याग करना चाहिए –

साधू ऐसा चाहिए जैसे सूप समाय।
सार सार को गहि रहे, थोथा देय उड़ाय।।

कबीर ने सत्य पर बल देते हुए यह कहा है –

साँच बरोबर तप नहीं, झूठ बरोबर पाप।
जाके हिरदय सांच, ताके हिरदय आप।।

सत्याचरण करने वाले साधक के हृदय में आप (परमात्मा) रहते हैं। उन्होंने यह भी कहा है कि हम किसी को ठगने का प्रयास तक न करें।

9. राम–रहीम की एकता पर बल :–

कबीर ने अपने समय के लोगों को कहा कि राम, रहीम, केशव, महादेव, ब्रह्मा

Scanned by CamScanner

तथा मुहम्मद – ये सभी एक ही ईश्वर के अनेक नाम हैं। हम इन्हें अलग–अलग मान कर आपस में लड़े नहीं –

दुइ जगदीस कहाँ ते आए, कहु कौने भरमाया।

उन्होंने यह भी कहा है –

हिन्दू तुरक की एक राह है, सतगुरु यहै बताई।

10. पुस्तकीय ज्ञान का खण्डन :–

कबीर शास्त्रीय ज्ञान की अपेक्षा आचरण की शुद्धता पर बल देते हैं। शास्त्रीय ज्ञान के आधार पर समाज में अपना वर्चस्व रखने की चेष्टा करने वालों के कबीर घोर विरोधी हैं। कबीर काजी को कहते हैं –

काजी कोन कतेब बखाने।
पढ़त–पढ़त केते दिन बीते, गति एकै नहिं सूझै।

कबीर ने शास्त्रज्ञों को भी चुनौती देते हुए कहा –

तू कहता कागद की लेखी, मैं कहता आँखिन की देखी।
मैं कहता सुरझावनवारी, तू राखी उरझोय रे।।

कबीर ने कथनी और करनी की एकता पर बल दिया है।

11. प्रेम के महत्त्व की अभिव्यक्ति :–

प्रेम का आदर्श अत्यन्त ऊँचा है। प्रेम व्यापक धरातल पर प्रतिष्ठित है तथा यह अनेकता में एकता स्थापित करने वाला है। प्रेम जीवन का संगीत है, जीवन की तरलता है तथा लोक–परलोक का साथी है। कबीर ज्ञानमार्गी थे फिर भी उन्होंनें प्रेम के महत्त्व का अंकन किया है। कबीर का यह प्रेम आध्यात्मिक जगत् का प्रेम है परन्तु इस प्रेमतत्त्व की आवश्यकता भूतकाल में थी, वर्तमानकाल में है तथा भविष्यतकाल में भी रहेगी।

आज विश्व में प्रेम का अभाव है जिससे देशों की आपसी कटुता बढ़ रही है। परिवार, समाज, प्रदेश, देश तथा विश्व में प्रेम की कमी खलती है। प्रेम में वह शक्ति है जो सम्पूर्ण विश्व में एकता स्थापित कर सकता है। कबीर ने कहा कि प्रेमी व्यक्ति के सामने न तो कोई नियम है और न कोई व्यवहार –

जहाँ प्रेम तहँ नेम नहिं, तहाँ न बुधि व्यौहार।
प्रेम मगन जब मन भया, कौन गिने तिथि बार।।

कबीर की दृष्टि में प्रेम के लिए बलिदान तक की आवश्यकता हो जाती है –

कबीरा यहुँ घर प्रेम का, खाला का घर नांहि।
सीस उतारि भुंई धरै, सो पेसे घर मांहि।।

कबीर की दृष्टि में ढाई अक्षरों वाला यह प्रेम मानव को निपुण बना देता है –

Scanned by CamScanner

पोथी पढ़ि–पढ़ि जग मुआ, पण्डित भया न कोय।
ढाई आखर प्रेम का पढ़ै सो पण्डित होय।।

बलिदानी व्यक्ति ही इस सच्चे प्रेम को प्राप्त कर सकता है –

प्रेम न बाड़ी उपजै, प्रेम न हाट बिकाय।
राजा–परजा जेहि रुचै, सीस देइ लै जाय।।

बिना प्रेम के मानव ईंट एवं पत्थर के समान जड़ है –

पढ़ि–पढ़ि के पत्थर भया, लिखि–लिखि भया तू ईंट।
कहै कबीरा प्रेम की लगी न एकौ छींट।।

लोभी तथा स्वार्थी व्यक्ति का सच्चे एवं शुद्ध प्रेम में विश्वास नहीं रहता है –

प्रेम पियाला जो पियै, सीस दच्छिना देय।
लोभी सीस न दे सकै, नाम प्रेम का लेय।।

प्रेम की गली अत्यन्त संकड़ी होती है जिसमें सच्चा प्रेमी अकेला ही प्रवेश कर सकता है –

प्रेम गली अति सांकरी, ता में दो न समाहिं।

प्रेम–शून्य मानव श्मशान के घड़े के समान ही है –

जा घट प्रेम न संचरै, सो घट जान मसान।
जैसे खाल लोहार की, सांस लेत बिनु प्रान।।

जब सच्चा प्रेम प्राप्त हो जाता है तो उस से मानव का तन और मन दोनों ही प्रसन्नता से सराबोर हो जाते हैं –

कबीर बादल प्रेम का, हम परि बरस्या आइ।
अन्तरि भीगी आत्मा, हरी भई बनराइ।
बरस्या बादल प्रेम का, भीजि गया सब अंग।।

12. गुरु का महत्त्व :–

प्राचीन समय में गुरु का अत्यधिक महत्त्व था। गुरु ईश्वर से भी महान् समझा जाता था परन्तु कालान्तर में गुरु का सम्मान क्रमशः घटता गया और आधुनिक युग में गुरु का सम्मान शून्य पर आ गया है। आधुनिक युग में कबीर के द्वारा बताया गए गुरु के सम्मान की अत्यन्त आवश्यकता है। कबीर ने एक सच्चे गुरु के महत्त्व को इस प्रकार प्रकट किया है –

गुरु गोविन्द दोऊँ खड़े काके लागूं पाय।
बलिहारी गुरु आपनै, गोविन्द दियो बताय।।

Scanned by CamScanner

परन्तु कबीर ने पहचान (परख) कर गुरु बनाने की बात कही है। चलते–फिरते बिना परख किए गुरु के द्वारा बहुत हानि की आशंका रहती है –

जाका गुरु भी अंधला, चेला खरा निरंध।
अन्धै अन्धा ठेलिया, दोन्यूं कूप पड़न्त।।

कबीर का गुरु के विषय में यह विचार आज के युग में बहुत महत्त्व रखता है।

इस प्रकार समाज में व्याप्त कुरीतियों, संशय, अन्धविश्वास, पाखण्ड, मिथ्याचार, पारस्परिक वैमनस्य, धोखा, छल–छद्म तथा अलगाव के स्थान पर भ्रातृत्व, शुद्ध सत्ता, सच्चरित्र, विश्वास, पवित्रता, विश्वबन्धुत्व आदि मानवीय मूल्यों की स्थापना हिन्दी–साहित्य के निर्गुण सन्तों (विशेषतः कबीर) ने की। निर्गुण सन्त कबीर के यह कालजयी विचार आज के युग में भी प्रासंगिक हैं। निर्गुण सन्त कबीर के द्वारा दिखाए गए मानवता, सद्भावना, सहिष्णुता, प्रेम और अहिंसा के मार्ग पर चलने पर ही देश का उद्धार संभव है।

सन्दर्भ–ग्रंथ :–

1. हिन्दी–साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास (प्रथम खण्ड) – डॉ. गणपतिचन्द्र गुप्त
2. हिन्दी–साहित्य : युग और प्रवृत्तियाँ – डॉ. शिव कुमार शर्मा
3. कबीर ग्रंथावली – डॉ. त्रिलोकी नारायण दीक्षित
4. कबीर – आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी
5. कबीर – कृष्ण देव शर्मा

Scanned by CamScanner